P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कुशल सम्प्रेषक के रूप में शिक्षक

प्रियंका रावल
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय,
उदयपुर,राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत लेख विद्यालय में शिक्षक के कुशल सम्प्रेषक के रूप में भूमिका को निर्वहन करने पर लिखा गया हैं, इस लेख में बताया गया हैं शिक्षक में एक कुशल शिक्षक के समस्त मापदण्डों के साथ उसका एक कुशल सम्प्रेषक होना भी अतिआवश्यक हैं। क्योंकि यदि उसमें यह गुण नहीं है तो वह एक कुशल एवं अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता है। शिक्षक को एक कुशल सम्प्रेषक की समस्त विशेषताओं एवं कौशलों का अपने शिक्षण में प्रयोग करना होगा, जिससे उसके द्वारा प्रेषित किया गया संदेश अथवा शिक्षण अथवा विषयवस्तु वैसे ही विद्यार्थी समझे जैसा वह चाह रहा है। इस लेख के अन्त में एक रेटिंग स्केल भी दी गई है जिसमें कोई भी शिक्षक कुशल शिक्षक है अथवा नहीं स्वयं जाँच सकता है।

मुख्य शब्द : सम्प्रेषक, शिक्षक, संदेश, शिक्षण, विषयवस्तु, प्रापक, विद्यार्थी।

प्रस्तावना

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे सुन्दर आकृति का रूप देता है। किसी भी सुन्दर मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसी प्रकार एक अच्छा कुम्हार वही होता है जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है। यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गयी मूर्ति एवं बर्तन सुन्दर नहीं है तो वह जिस स्थान पर रखे जायेंगे उस स्थान को और अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे। शिल्पकार एवं कुम्हार की भाँति ही विद्यालयों एवं शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह अपने यहाँ अध्ययनरत् सभी विद्यार्थियों को इस प्रकार से सवारें और सजाये कि उनके द्वारा शिक्षित किये गए सभी विद्यार्थी ''विश्व का प्रकाश'' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भाँति होता है जो प्रत्येक विद्यार्थी को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर, उसे ''समाज का प्रकाश'' अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर 'समाज का अंधकार' बना सकता है।

विद्यालय 'विद्या' का मंदिर होता है। जहाँ विद्या की देवी माँ सरस्वती' के उपासक अर्थात् विद्यार्थी ज्ञान की प्राप्ति के लिये जाते हैं। विद्यालय वह पवित्र स्थान है जहाँ अबोध विद्यार्थियों को अनुशासन, सच्चरित्रता एवं सभ्य नागरिक बनने की शिक्षा दी जाती हैं। यह शिक्षा विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा दी जाती हैं। परन्तु क्या प्रत्येक शिक्षक ऐसी शिक्षा दे पाता है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास हो सके। बेशक प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ऐसी ही शिक्षा देता है जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो पाए बशर्ते विद्यार्थी तक वह शिक्षा उसी रूप में पहुँचे जैसी शिक्षक चाह रहा है, लेकिन यह सम्भव तब हो पाता है जब शिक्षक द्वारा सम्प्रेषित संदेश विद्यार्थी समझे, अर्थात् विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य प्रभावी सम्प्रेषण हो यह तब ही हो पाएगा जब शिक्षक एक कुशल सम्प्रेषक हो।

उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का प्रमुख उद्देश्य यह है कि एक शिक्षक सम्प्रेषण कौशल में सम्प्रेषक की भूमिका को समझे एवं साथ ही कक्षा में शिक्षण के दौरान अपने आपको कुशल सम्प्रेषक के तौर पर प्रदर्शित करें जिससे विद्यार्थी उसके द्वारा करवाए गए शिक्षण को बेहतर तरह से समझ पाए।

एक अच्छे शिक्षक के मापदण्ड

वर्तमान में एक अच्छे शिक्षक के मापदण्डों पर विचार करें तो यह प्रश्न स्वाभाविक ही उठता है कि एक अच्छा शिक्षक किसे कहा जाए।

1. वह जो अपने विषय में पारंगत हो? या
2. वह जिसकी अभिव्यक्ति सशक्त हो? या
3. वह जिसका व्यक्तित्व प्रभावी हो? या

4. वह जो व्यवहारकुशल हो? या
5. वह जो कुशल वक्ता हो? या
6. वह जो स्वयं के विषय के साथ अन्य विषयों की जानकारी रखता हो ? या
7. वह जो आधुनिक शिक्षण विधियों का ज्ञान रखता हो ? या
8. वह जो नवाचारों के प्रति जिज्ञासु होता हो? या
9. वह जो शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी रखता हो?

उत्तर यही प्राप्त होगा कि ये समस्त मापदण्ड प्रायः एक शिक्षक में पाए जाते है, परन्तु द्वितीय प्रश्न यह उठता है कि क्या इन समस्त मापदण्डों पर किसी शिक्षक को कुशल शिक्षक कहा जा सकता है। बेशक हाँ, इन समस्त मापदण्डों के आधार पर एक शिक्षक को कुशल शिक्षक कहा जा सकता है।

आइये सबसे पहले इस उत्तर की गइराई को नापते है फिर निर्णय तक पहुँचते हैं। इस हेतु कुछ प्रश्नों का जवाब जानने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न–1 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अपने विषय में तो पारंगत हो परन्तु एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–2 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जिसका व्यक्तित्व तो प्रभावी हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–3 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो व्यवहारकुशल तो हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–4 क्या एक अच्छा शिक्षक दक्ष अभिनेता तो हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–5 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जिसकी अभिव्यक्ति तो सशक्त हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–6 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अन्य विषयों की जानकारी तो रखता हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो।
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–7 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो आधुनिक शिक्षण विधियों का ज्ञाता तो हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।
प्रश्न–8 क्या एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो नवाचारों के प्रति जिज्ञासु तो हो परन्तु वह एक कुशल सम्प्रेषक न हो?
उत्तर नहीं, दोनों का होना आवश्यक हैं।

इन समस्त प्रश्नों के उत्तरों से एक बात यह निकलकर आ रही है कि एक शिक्षक को अच्छा एवं प्रभावी शिक्षक होने के लिए एक कुशल सम्प्रेषक भी होना होगा। इस बात की सत्यता को प्रदर्शित करती ये पंक्तियाँ एक शिक्षक के कुशल सम्प्रेषक होने को दर्शाती है।

विद्यार्थी पुस्तकों में पढ़ी गई बातें भूल जाएंगे। परन्तु वे शिक्षक की कही हुई बातें कभी नहीं भूल पाएंगे।

ज्यादतर शिक्षकों का सपना पूरे उत्साह के साथ कक्षा में प्रवेश करना और अपनी शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों को मंत्रमुग्ध करना होता है परन्तु वे कभी मास्टर (मा+स्तर = माँ का स्तर) बनने का प्रयास नहीं करते। एक शिक्षक के तौर पर हम लिखित शब्दों, इशारों, शारीरिक भाषा, आवाज़ और प्रस्तुतिकरण के जरिये विभिन्न स्वरूपों में विचारों, सूचनाओं, अनुदेशों, दृष्टिकोणों और अपेक्षाओं का सम्प्रेषण करते हैं। एक कुशल शिक्षक के तौर पर हमारी प्रशंसा, सीधे इस बात से जुड़ी हुई है कि हम अपने विद्यार्थियों के साथ किस प्रकार सम्प्रेषण करते हैं। एक दक्ष और कुशल सम्प्रेषक प्रभावी बातचीत का मार्ग प्रशस्त करता है।

सम्प्रेषण

सम्प्रेषण का अर्थ व्यक्ति के विचारों तथा मनोभावों से दूसरे व्यक्ति को अवगत कराना है।

सम्प्रेषण की परिभाषाएँ

एडविन एमरी, फिलिप एच., आल्ट एवं डब्ल्यू.के. एगी के अनुसार

''सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम सम्प्रेषण है।

कीथ डेविस के अनुसार

''सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसमें संदेश और समझ को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाया जाता हैं।

विद्यालय के संदर्भ में यदि सम्प्रेषण कौशल पर चर्चा करें तो यही पाया जाएगा कि विद्यालय भी इस कौशल से दूर नहीं है अर्थात् सम्प्रेषण से वह कैसे अछूता रह सकता है जहाँ पर प्रत्येक कक्षा में सम्प्रेषक, संदेश एवं प्रापक मौजुद हैं। विद्यालय में इन तीनों का रूप निम्न प्रकार से है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सम्प्रेषण प्रक्रिया के मुख्य तत्व

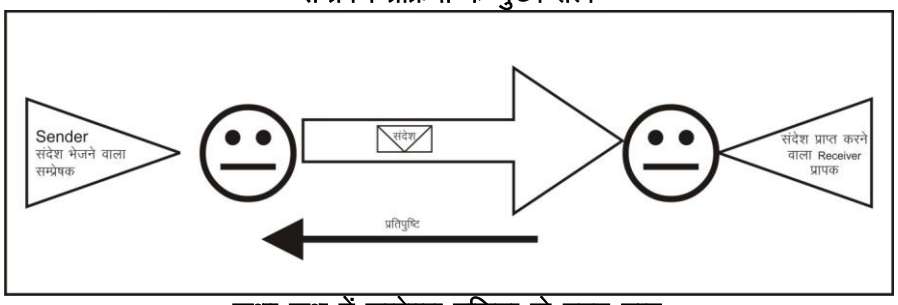

कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण प्रक्रिया के मुख्य तत्व

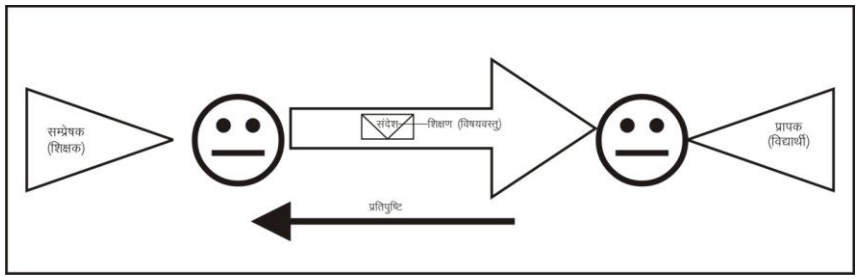

सम्प्रेषण की प्रक्रिया को देखे तो इसके तीन तत्व महत्वपूर्ण है, जिनके बिना सम्प्रेषण संभव नहीं होता है।

1. सम्प्रेषक
2. संदेश,
3. प्रापक

ठीक उसी प्रकार विद्यालय के कक्षा कक्ष में भी सम्प्रेषण की प्रक्रिया पर नज़र डाले तो यहाँ

1. सम्प्रेषक अर्थात् शिक्षक
2. संदेश अर्थात् शिक्षण (विषयवस्तु)
3. प्रापक अर्थात् विद्यार्थी होता है।

सम्प्रेषक

किसी भी प्रकार की सम्प्रेषण प्रक्रिया को क्रियान्वित करने वाला सम्प्रेषक कहलाता है। वह सम्प्रेषण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण तत्व होता है, जिसे संदेश की पूर्ण जानकारी होती है।

डेविड के अनुसार सम्प्रेषक में 4 गुणों का होना आवश्यक है

1. सम्प्रेषण की निपुणता,
2. मनोवृत्ति,
3. ज्ञान का स्तर,
4. सामाजिक सांस्कृतिक आवरण।

उसे हमेशा ध्यान रखना होगा कि

1. क्या कहना है,
2. किसे कहना है,
3. उसे सुनने के लिए कौन तैयार है,
4. वह कहने का अधिकारी है या नहीं
5. संदेश के लिए उचित शब्द क्या है,
6. संदेश कितना प्रभावी होगा आदि।

रोजर्स (Rogers) के अनुसार

संदेश तभी प्रभावशाली हो सकता है जब सम्प्रेषक तथा प्रापक दोनों का एक ही लक्ष्य हो तथा दोनों एक दूसरे के विचारों से सहमत हो। संदेश भेजने वाला ही सम्पूर्ण प्रक्रिया की शुरूआत करता है। इसी प्रकार विद्यालय में भी एक शिक्षक को शिक्षण कराने के दौरान इन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना होगा, तभी वह एक कुशल सम्प्रेषक बन पाएगा तथा कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य के दौरान सफल सम्प्रेषण हो पाएगा।

संदेश

यह सम्प्रेषण प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। इसमें क्या भेजना है, शामिल होता है। संदेश प्रायः सम्प्रेषणकर्ता द्वारा ही तैयार किया जाता है। जो आदेश, निर्देश, सुझाव, शिकायत, शिक्षण (विषयवस्तु) आदि किसी भी रूप में हो सकता है। यह बहुत स्पष्ट, उद्देश्ययुक्त, लिपिबद्ध, समयानुरूप तथा नियंत्रण करने योग्य होना चाहिए। अच्छे संदेश में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए, जिसका ध्यान शिक्षण के दौरान एक शिक्षक को रखना चाहिए।

1. अर्थपूर्ण हो।
2. सत्य, संतुलन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला हो।
3. लक्षित व्यक्ति तथा समूह की आवश्यकता के अनुकूल हो।
4. समयानुकूल तथा व्यावहारिक हो।
5. संदेश की भाषा, व्यक्ति व समूह के अनुकूल हो।

संदेश प्रेषित करते वक्त अर्थात् कक्षा कक्ष में शिक्षण के दौरान भी शिक्षक को निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :–

संदेश संकेत (Message Code)

संदेश संकेत, संदेश को ज्यादा स्पष्ट व सरल बनाते हैं। प्रतीकों द्वारा संदेश को सार्थक तथा प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।

विषय वस्तु (Message Content)

विषयवस्तु का चयन प्राप्ति प्रयोजन के अनुरूप होना चाहिए। जिसे देश, काल तथा परिस्थिति के अनुरूप

बनाकर संदेश की विश्वसनीयता को बढ़ाया जा सकता है।

संदेश प्रतिपादन (Style of Message)

प्रायः संदेश लिखने की तकनीकी, बोलने की शैली तथा सम्प्रेषण सामग्री का प्रभावी ढ़ंग से प्रयोग कर संदेश के बारे में प्रेरणा दी जाती है। यह आवश्यक हैं कि संदेश को समय पर लक्षित समूह तक पहुँचाया जावें तथा उसे प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त माध्यम का प्रयोग हो।

प्रापक (Receiver)

संदेश प्राप्तकर्ता वह पक्षकार है जिसको संदेश पहुँचाना है। संदेश तैयार हो जाने पर तथा माध्यम का निर्धारण हो जाने पर संदेश, प्रापक को भेजा जाता है। इसके अभाव में भी संदेश अपूर्ण रहता है। वह धैर्य से सुनने/देखने वाला, अधैर्यपूर्वक सुनने, देखने वाला स्पष्ट तथा अस्पष्ट रूप से देखने सुनने वाला कोई भी हो सकता है। सफल सम्प्रेषण हेतु प्रापक में निम्न गुणों का होना आवश्यक हैं :–

1. संदेश को धैर्यपूर्वक ग्रहण करें।
2. उसका अनुपालन करें।
3. विश्वसनीय सूचनाओं का चयन करने में समर्थ हों।

विद्यार्थी के संदर्भ में भी एक विद्यार्थी में इन गुणों के होने पर ही सम्प्रेषण या शिक्षण पूर्ण होता है।

एक अच्छा शिक्षक अपने विषय का स्वामी होता है। परन्तु एक महान् शिक्षक उत्कृष्ट सम्प्रेषक होता है। वह न केवल अपनी पाठ्यक्रम आवश्यकताओं का संचालन करता है बल्कि बुद्धिमत्तापूर्ण प्रश्न भी पूछता है। वह एक सार्थक ढ़ंग से विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम के अधिकतम परिणामों पर विचार विमर्श हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। कुशल शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, उनके विचारों और प्रश्नों का विश्लेषण करते हैं और सृजनात्मक तरीके से प्रभावी प्रतिपुष्टि भी देते हैं।

विद्यालय में सम्प्रेषण पर विचार करते हुए एक समस्या यह उत्पन्न हो रही है कि एक शिक्षक कुशल सम्प्रेषक के रूप में कैसे उभरे अर्थात् एक शिक्षक कुशल सम्प्रेषक कैसे बने उसमें किन कौशलों का होना अनिवार्य है जिनके माध्यम से एक शिक्षक कुशल सम्प्रेषक बन पाए।

कुशल सम्प्रेषक बनने हेतु एक शिक्षक को निम्नलिखित सूक्ष्म शिक्षण कौशलों का ज्ञान ही नहीं होना चाहिए अपितु इनका उपयोग भी करना आना चाहिए।

इस लेख के पाठक यदि शिक्षक है तो उनके मस्तिष्क में ये बात स्वाभाविक रूप से उठ रही होगी कि ये समस्त कौशल तो सूक्ष्म शिक्षण के हैं। पर जरा ठहरिए एवं सोचिए कि प्रत्येक शिक्षक कुशल सम्प्रेषक क्यों नहीं बन पाता है, उसका शिक्षण प्रभावी क्यों नहीं हो पाता हैं। उत्तर के रूप में आप यहि पाएंगे कि प्रत्येक शिक्षक को इन कौशलों का पूर्ण ज्ञान है परन्तु कहीं न कहीं वह इनका उपयुक्त एवं प्रभावी उपयोग नहीं कर रहा है, इस कारण से वह एक कुशल सम्प्रेषक नहीं बन पा रहा है।

इन कौशलों के उपयुक्त उपयोग के साथ ही एक शिक्षक को अपने शिक्षण को और प्रभावी बनाने हेतु इन नो स्तम्भों का भी ध्यान रखना होगा।

प्रभावी शिक्षण के नौ स्तम्भ

1. अपने उद्देश्यों के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण रखें।
2. विद्यार्थियों की सराहना करें और उन्हें प्रेरित करें।
3. सुलभ रहें।
4. एक टीम लीडर बनें।
5. हास्य–विनोद का सही इस्तेमाल करें।
6. अपने अध्यापन में नवचार लेकर आए।
7. विद्यार्थियों में जिज्ञासा बढ़ाएँ।
8. कक्षा में समुदाय और संबंधों की भावना विकसित करें।
9. नए कौशल सीखने की लालसा और जोश बनाए रखें।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आज विश्व अभूतपूर्व गति से प्रगति कर रहा हैं जहाँ हमें अपने विद्यार्थियों को मानवता की अद्भुत दौड़ में शामिल होने के लिये उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। शिक्षकों के तौर पर हमारे ऊपर उनकी सफलता की महान् जिम्मेदारी है। महान् शिक्षक अद्भुत, उत्साही और दुर्लभ होते हैं। यदि आप एक महान् शिक्षक बनना चाहते हैं तो पहले आप स्वयं एक कुशल सम्प्रेषक बने। इस हेतु पहले आप ये जानिये कि आप एक कुशल सम्प्रेषक है या नहीं, कृपया स्वयं से ही पूछ लीजिये।

	कथन	हमेशा (10)	कभी–कभी (5)	कभी नहीं (0)
☞	क्या आप स्पष्ट बोलते है।			
☞	क्या आप उचित गति के साथ बोलते है।			
☞	क्या आप शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के साथ दृष्टि सम्पर्क बनाए रखते है।			
☞	क्या आप विद्यार्थियों को उपयुक्त पुनर्बलन प्रदान करते है।			
☞	क्या आप बोलते समय विराम चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग करते है।			
☞	क्या आप बोलते समय किसी शब्द को बार–बार दोहराते है।			
☞	क्या आपका गैर मौखिक सम्प्रेषण सही है।			
☞	क्या आप सौम्य और सरल भाषा का प्रयोग करते हैं।			
☞	क्या आप महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ज़ोर देते हैं और तार्किक क्रम का प्रयोग करते है।			
☞	क्या आप शिक्षण सामग्री कुशलतापूर्वक तैयार करते हैं जो समझ में आसानी से आ जाती हो।			
☞	क्या आप विद्यार्थियों को आनंददायी शिक्षा प्रदान करते हैं।			
☞	क्या आपका प्रस्तुतीकरण का तरीका प्रभावी है।			
☞	क्या आप पूर्व ज्ञान का नवीन ज्ञान से संबंध स्थापित करते हैं।			
☞	क्या आप प्रकरण के अनुसार उपयुक्त युक्ति का प्रयोग करते हैं।			
☞	क्या आप विद्यार्थियों में विषय के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं।			
☞	क्या आप विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते है।			
☞	क्या आप प्रकरण से सम्बन्धित तथ्यों का समावेश करते है।			
☞	क्या आप मुख्य बिन्दु का पूर्ण विश्लेषण करते है।			
☞	क्या आप सारांश कथन के साथ प्रभावी समापन करते है।			
☞	क्या आप बहु–इन्द्रिय गतिविधि का प्रयोग करते है।			

यदि आपके सभी उत्तर 'हाँ' में हैं, तो आपको एक उत्कृष्ट शिक्षक होने के लिये बधाई। यदि आपका कुल स्कोर 60 प्रतिशत से अधिक हैं तो आप प्रशंसा के पात्र है एवं यदि 50 प्रतिशत से कम है तो आप समझ सकते है कि अब आपको क्या करना है।

निष्कर्ष

शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर विद्यार्थियों को एक शक्ति के रूप में निर्मित करते है। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक का न केवल ज्ञानी होना उपयुक्त है अपितु साथ ही उसे अपने ज्ञान को सम्प्रेषित करने की कला में भी निपूर्ण होना होगा। अर्थात् उसे सम्प्रेषण कौशल के प्रमुख घटकों को समझना होगा, जिससे वह कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण कौशल की महत्ता को समझ कर अपने आप में उन परिवर्तनों को करें जिससे वह एक कुशल सम्प्रेषक के रूप में उभर सकें। जब शिक्षक एक कुशल सम्प्रेषक होगा तभी समस्त विद्यार्थियों तक उसका ज्ञान सम्प्रेषित हो पाएगा जिसका लाभ विद्यार्थी ले सकेंगे एवं अपने आपको एक चरित्रवान नागरिक बना कर अपने प्रकाश से पूरे संसार को प्रकाशमान बना सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *द्विवेदी, डॉ. वीणा (2014) : ''प्रशिक्षण एवं विकास'' हिमांशु पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
2. *दुबे, डॉ. सत्यनारायण शरतेन्दु (2007) ''सूक्ष्म–शिक्षण तथा अध्यापन–कौशल'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद।*
3. *Paliwal Dr. A.K. (2000) "Communication Skill in English" Surbhi Publication, Jaipur.*
4. *कथूरिया, डॉ. रामदेव पी. (1996) ''सूक्ष्म अध्यापन'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
5. *नारंग, वैश्ना (1996) ''सम्प्रेषणपरक हिन्दी भाषा शिक्षण'' प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली।*
6. *शर्मा, डॉ. आर. (1995) ''सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण अभ्यास'' साहित्य प्रकाशन, आगरा।*
7. *bjmc110401.blogspot.in*
8. *kiskash.com*
9. *https://books.google.co:in*
10. *rajasthanshiksha.com*